



# पत्र-पुष्प



**“परमात्म स्नेह द्वारा सर्व कमजोरियों से मुक्त बन जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो”**

**(निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहनों प्रति दादी जी का याद-पत्र : 20-11-2023)**

परमप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा योगयुक्त रह देह, देह के सम्बन्ध और देह के पदार्थों के बंधनों से मुक्त रहने वाली संगमयुगी जीवनमुक्त आत्मायें, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - समय प्रमाण आप सभी अपने सूक्ष्म बंधनों को चेक कर बंधनमुक्त, योगयुक्त बन जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव कर रहे होंगे। इस बार अव्यक्त महावाक्यों में बाबा ने विशेष इशारा दिया है कि बच्चे 9 रत्नों में आना है तो 9 मुख्य बातों से मुक्त बनो। जरूर आप सभी ने विशेष अपना चार्ट चेक किया होगा कि हम इन सर्व बंधनों से कहाँ तक मुक्त हुए हैं? आज आपके पास इस पत्र के साथ जो अव्यक्त इशारे भेज रहे हैं, इसमें अनेकानेक बंधनों से मुक्त होने की विधियां जो बापदादा ने समय प्रति समय बताई हैं, वह लिखी गई हैं। बंधनमुक्त बनने की एक बहुत सहज विधि बाबा बताते हैं कि बच्चे सदा परमात्म स्नेह में समाये रहो, यह परमात्म स्नेह सर्व बंधनों से मुक्त बना देगा। तो इस दिसम्बर मास में हम सभी उसी अलौकिक स्नेह में समाते हुए विशेष बंधनमुक्त बनने का पुरुषार्थ करें ताकि नये वर्ष में ब्रह्मा बाप समान अव्यक्त फरिश्ता बन, सदा उड़ती कला का अनुभव कर सकें। जनवरी मास विशेष प्यारे साकार ब्रह्मा बाप की स्मृतियों का मास है। पूरा ही मास सभी अन्तर्मुखी बन अव्यक्ति साइलेन्स में रह, फरिश्ते स्वरूप द्वारा सभी को अपनी दिव्यता और अलौकिकता का साक्षात्कार करायेंगे।

देखो, प्यारे बापदादा द्वारा बार-बार यही इशारा मिल रहा है कि बच्चे जितना समय मिले उसमें अशरीरी बनने का अभ्यास करते रहो। जब चाहो तब व्यक्त का आधार लो और जब चाहो तब व्यक्त से न्यारे हो जाओ। कभी मन के वश अर्थात् व्यर्थ संकल्पों के वश नहीं होना। व्यर्थ संकल्पों पर पूरा कन्ट्रोल रख, परिस्थितियों का सामना करने की सम्पूर्ण शक्ति धारण कर विजयी बनकर रहना। निरन्तर परमात्म स्नेह में समाये रहेंगे तो उनके संग का रंग सहज लग जायेगा। फिर एक-एक बंधन को काटने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी इसलिए सदा के स्नेही बन कर्म करते चलो। फिर कोई भी कर्म अपने बंधन में नहीं बांधेगा, डबल लाइट बन जायेंगे।

अभी तो समय को सामने देखते हुए “एक बाप दूसरा न कोई”, यही वायदा सदा स्मृति में रहे। इससे सहज ही मनमनाभव की स्थिति बन जायेगी और अलौकिक अतीन्द्रिय सुख वा मनरस का अनुभव करते रहेंगे। फिर इस पुरानी दुनिया की कोई भी वस्तु या इन्द्रियों का रस आकर्षित नहीं करेगा।

बोलो, हमारे मीठे भाई बहिनें ऐसा ही लक्ष्य रख कर्म बंधनों से मुक्त रह जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव कर रहे हो ना! अभी तो मधुबन बेहद घर में “बाप और बच्चों के अव्यक्त मिलन की” रिमझिम चल रही है। देश विदेश से अनेकानेक बाबा के बच्चे भाग-भाग कर अपने बेहद घर में आकर सर्व खजानों व शक्तियों से भरपूर हो रहे हैं। बाकी आने वाले नये वर्ष में और भी तीव्र गति के साथ नये उमंग, नये उत्साह से ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न वा सम्पूर्ण बनने का पुरुषार्थ करना जी।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद..

ईश्वरीय सेवा में,  
**बी. के. रतनमोहिनी**



## ये अव्यक्त इशारे



### जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए बन्धनों से मुक्त बनो

1) इस संगमयुगी ब्राह्मण जीवन में रहते हुए तमोगुणी वायुमण्डल, वायब्रेशन, तमोगुणी वृत्तियाँ, माया के वार, इन सबसे मुक्त रहो तब कहेंगे जीवनमुक्त। अभी के जीवनमुक्त ही भविष्य में जीवनमुक्त पद प्राप्त करते हैं।

2) देह ही सबसे अधिक अपने बन्धन में बांधती है। इस बंधन से मुक्त होने के लिए कर्तव्य का आधार समझ शरीर में आओ, कर्म पूरा होते ही न्यारे हो जाओ। जो इस देह के बंधन से मुक्त हैं वही योगयुक्त हैं। जो जितना योगयुक्त हैं उतना जीवनमुक्त हैं।

3) देह के सम्बन्ध और देह के पदार्थों से लगाव मिटाना सरल है लेकिन देह के भान से मुक्त होना, मेहनत की बात है, इसके लिए अभी जोर-शोर से प्रैक्टिस करो कि जब चाहें तब व्यक्त का आधार लें और जब चाहें व्यक्त से न्यारे हो जाएं। कोई भी बात से मुक्ति न मिलने का कारण शक्ति की कमी है। विघ्नों से मुक्ति चाहते हो तो शक्ति धारण करो अर्थात् अलंकारी रूप होकर रहो।

4) जो बन्धनमुक्त हैं वह कभी मन के वश अर्थात् व्यर्थ संकल्पों के वश नहीं होंगे। उनका व्यर्थ संकल्पों पर पूरा कन्ट्रोल होगा। वे परिस्थितियों के वश भी नहीं होंगे। उनमें परिस्थितियों का सामना करने की सम्पूर्ण शक्ति होगी। वे सहजयोगी और सर्व के सहयोगी होंगे। उन्हें सर्व का सहयोग भी स्वतः प्राप्त होता रहेगा।

5) बंधनमुक्त आत्मा शरीर को निमित्त आधार समझेगी। कभी भी अधीन नहीं होगी। ऐसे निमित्त आधारमूर्त ही सर्व आत्माओं के उद्धार मूर्त बन सकते हैं। जितना जो अधीनता से परे है उतना सर्विस में सफलतामूर्त है। बंधनमुक्त बनने के लिए दो शब्द याद रखो - एक साक्षी और दूसरा साथी, इससे बहुत जल्दी बन्धनमुक्त अवस्था बन जायेगी।

6) कभी बहुत ऊंची स्थिति, कभी नीचे की स्थिति में आना, अभी इस आने जाने के आवागमन के चक्र से मुक्त बनो। वे लोग जन्म-मरण के चक्र से छूटने चाहते हैं और आप स्मृति

विस्मृति के आवागमन का जो चक्र है, इससे मुक्त होने का पुरुषार्थ करो। सदैव अपने सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करने से व्यर्थ बातों से स्वतः किनारा हो जायेगा और आप आवागमन से छूट जायेंगे।

7) हर संकल्प और हर सेकेण्ड विल करने से विल पावर आयेगी, सब विल कर देंगे तो सहज नष्टोमोहा बन बंधनमुक्त बन जायेंगे। जो भी कर्म वा संकल्प करते हो, साकार बाप के हर कर्तव्य और चरित्र की कसौटी पर चेक करो कि यह यथार्थ है वा अयथार्थ है? व्यर्थ है वा समर्थ है? इस कसौटी पर देखने के बाद जो भी कर्म करेंगे वह सहज और श्रेष्ठ होगा। यही विधि हर विघ्न से मुक्ति दिला देगी।

8) सबसे महीन और सुन्दरता का धागा एक “मैं” शब्द ही है। मैं शब्द देही अभिमानी भी बनाता और देह अभिमान में भी लाता। मैं फलानी हूँ, मैं सभी कुछ जानती हूँ, मैं किस बात में कम हूँ, मैं सब कुछ कर सकती हूँ, मैं जो हूँ, जैसी हूँ वह मैं जानती हूँ, मैं कैसे सहन करती हूँ, कैसे समस्याओं का सामना करती हूँ, कैसे मरकर चलती हूँ, यही मैं सुल्टे के बजाए उल्टे रूप में महीन, सुन्दरता का धागा बंधन बन जाता है। अब इस मैं-मैं के बंधन से मुक्त बनो।

9) सर्व कमजोरियों से मुक्ति की युक्ति है कि ‘सदा परमात्म स्नेही बनो’ उस स्नेही के निरन्तर संग में रहने से रूहानियत का रंग सहज ही लग जायेगा। अगर एक-एक मर्यादा को जीवन में लाने का प्रयत्न करेंगे तो कहाँ मुश्किल, कहा सहज लगेगा और इसी प्रैक्टिस वा कमजोरी को भरने में समय बीत जायेगा इसलिए अब एक सेकेण्ड में मर्यादा पुरुषोत्तम बनने के लिए सिर्फ सदा के स्नेही बनो।

10) कर्म करते हुए कर्मबन्धन से मुक्त सदा डबल लाइट रूप में रहो। यह शरीर रूपी ड्रेस टाइट न हो। बन्धन-मुक्त अर्थात् लूज़ ड्रेस। आर्डर मिला और सेकेण्ड में न्यारे अशरीरी हुए। अन्त समय में अपनी यह देह भी याद न आये, नहीं तो देह के साथ देह के सम्बन्ध, पदार्थ, दुनिया सब एक के पीछे आ

जायेंगे। इसके लिए यह वायदा याद रहे कि “एक बाप दूसरा न कोई”, तो बंधनमुक्त हो जायेंगे।

**11)** सदा मनमनाभव की स्थिति में स्थित रह अलौकिक अतीन्द्रिय सुख वा मनरस का अनुभव करो तो इन्द्रियों के रस अर्थात् विनाशी रस की आकर्षण से मुक्त हो जायेंगे। जो पुरानी दुनिया की कोई भी वस्तु या इन्द्रियों के रस में फंसे हुए रहते हैं वे मनरस का अनुभव नहीं कर सकते, इसलिए इससे मुक्त बनो।

**12)** आजकल सारी दुनिया नाम, मान, शान रूपी माया की जाल में फँसकर तड़प रही है, उन्हें इस जाल से मुक्त करने के लिए पहले स्वयं को इस सूक्ष्म जाल से मुक्त करो। संकल्प और स्वप्न में भी माया का वार न हो। कोई भी चीज़ आकर्षित न करे, सूक्ष्म आसक्तियों से भी मुक्त इच्छा मात्रम् अविद्या बनो।

**13)** जैसे बाप शरीर का लोन लेते हैं, बंधन में नहीं आते, जब चाहे आये, जब चाहे चले जायें, निर्बन्धन हैं। ऐसे आप बच्चे भी शरीर के, संस्कारों के, स्वभाव के बंधनों से मुक्त बनो। जब चाहें, जैसे चाहें वैसे संस्कार बना लो। जैसे देह को चलाने चाहें वैसे चलाओ। जैसा स्वभाव बनाने चाहो वैसा बना लो। ऐसा नहीं कहो कि मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार ही ऐसा है, क्या करूँ! अब इससे भी मुक्त बनो।

**14)** सम्पन्न बनने के लिए बाह्यमुखता के बन्धनों से मुक्त बनो। बाह्यमुखता के रस बाहर से बड़े आकर्षित करते हैं, यह रस ही सूक्ष्म बंधन बन सफलता की मंजिल से दूर कर देते हैं, इसलिए इसको कैची लगाओ। व्यर्थ और साधारण बोल नहीं बोलो। कम बोलो, धीरे बोलो, मधुर और सुखदाई बोल बोलो, डिस्टर्ब करने वाले बोल से मुक्त, क्रोध मुक्त बनो।

**15)** मैं और मेरा-पन ही फर्शवासी बनाता है। फरिश्ता बनना अर्थात् मैं और मेरेपन के बन्धन से मुक्त बनना। इस अलौकिक जीवन में ‘मैं’ और ‘मेरा’ ही सुनहरी जंजीर है। मैं अच्छा ज्ञानी हूँ, मैं ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा हूँ, मेरी यह विशेषता है, मेरी यह नेचर है, अब इस मैं और मेरे पन से मुक्त बनो।

**16)** सदा याद रखो कि मैं पूज्य आत्मा हूँ। पूज्य आत्मा अर्थात् सदा पवित्र। कभी भी दैहिक दृष्टि न हो। इसमें दूसरे को दोषी बनाकर स्वयं को अलबेला मत बनाओ। मन्सा संकल्प में भी किसी देहधारी के झुकाव में आना लगाव की निशानी है, यह भी महापाप है। तो सेवा के संबंध में आते हुए इस महापाप से मुक्त रहो।

**17)** विकर्माजीत स्टेज का अनुभव करने के लिए विकल्पों वा व्यर्थ संकल्पों से मुक्त रहो। हर समय स्वयं को याद और सेवा में बिजी रखो, मन को सम्पूर्ण समर्पण कर दो, मन में श्रीमत के सिवाए कोई भी संकल्प उत्पन्न न हो तब व्यर्थ संकल्पों वा विकल्पों से मुक्त रहेंगे।

**18)** गृहस्थ व्यवहार को सम्भालते हुए, सेवा करते हुए सदा उपराम रहो। याद रखो मेरी सेवा नहीं, बाप ने दी है, तो निर्बन्धन रहेंगे। मेरी गृहस्थी नहीं, ‘मैं ट्रस्टी हूँ, बन्धन मुक्त हूँ’ – ऐसी प्रैक्टिस करो। सूक्ष्म मोह की रस्सियों से भी मुक्त, नष्टमोहा स्मृति स्वरूप बनो।

**19)** स्वदर्शन चक्र सदा और स्वतः फिरता रहे तो पर-दर्शन चक्र से मुक्त रहेंगे। अब क्यों, क्या के क्वेश्चन की जाल से सदा मुक्त हो जाओ, तो योग-युक्त, जीवन मुक्त चक्रवर्ती बन बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा में चक्र लगाते रहेंगे। एक स्वदर्शन चक्र अनेक व्यर्थ चक्रों को खत्म करने वाला है।

**20)** यह विश्व आपके सेवा का स्थान है इसलिए बेहद में रहो। हद में नहीं आओ। जितना बेहद का लक्ष्य रखेंगे तो हद के बन्धनों से सहज मुक्त होते जायेंगे। जो अभी संकल्प आता है कि समय नहीं मिलता, इच्छा है लेकिन शरीर नहीं चलता, शक्ति नहीं है... यह सब बन्धन हैं। जब दृढ़ संकल्प कर लेते कि बेहद की सेवा में आना ही है, लगना ही है तो यह बन्धन सेकण्ड में समाप्त हो जाते हैं।

**21)** अपने तकदीर की तस्वीर को देखते हुए कर्म करते भी मेहनत से मुक्त हो खुशी का अनुभव करो। कभी भी दुःख के आंसू न आयें। मन में दुःख की लहर आना माना मन के आंसू। तो न आंखों से आंसू आयें, न मन से। ऐसे रोने से मुक्त बनो। भाग्यवान, खुशानसीब आत्माओं के पास दुःख की लहर भी नहीं आ सकती।

**22)** ब्राह्मण जीवन में आलस्य और अलबेलापन भी बहुत बड़ा बन्धन है। ऊंची मंजिल पर पहुंचने के लिए यही विघ्न रूप बनाता है, इसलिए आलस्य और अलबेलेपन से भी मुक्त बनो। सदा उमंग-उत्साह में रहो तो मुश्किल भी सहज हो जायेगा।

**23)** क्या, क्यों, कैसे की उलझन में फंसना – यह सबसे बड़ा झमेला है, इससे ही मानसिक चिंतायें, मानसिक परिस्थितियों में मन उलझ जाता है। इससे मुक्त होने के लिए ड्रामा के ज्ञान को स्वरूप में लाओ तब फुलस्टाप लगा सकेंगे। कभी भी झमेलों में फंसकर लौकिक परिवार में, व्यवहार में, दैवी परिवार में प्राब्लम रूप नहीं बनो।

24) स्वमान और अभिमान के अन्तर को महीनता से चेक करके बोलचाल, उठने-बैठने में जो अभिमान दिखाई देता है या अपमान की जो फीलिंग आती है, इस अपमान और अभिमान से भी मुक्त बनो। जब अपने बुद्धि के अभिमान, श्रेष्ठ संस्कार, स्वभाव के अभिमान, सेवा की सफलता के अभिमान से मुक्त बनो तब ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण फरिश्ता बन सकेंगे।

25) ब्राह्मण जीवन की विशेषता प्रसन्नता है इसलिए चलन और चेहरे से सदा प्रसन्नता की झलक दिखाई दे। चाहे कोई गाली भी देता हो तो भी चेहरे पर दुःख की लहर न आये। ऐसे अप्रसन्नता मुक्त बनो। सर्व प्राप्तियों की स्मृति सदा प्रसन्नचित बना देगी।

26) अपने आपको देखो—पांच विकार, पांच प्रकृति के तत्वों के बन्धन से कितने परसेन्ट में मुक्त हुए हैं? लिप्त आत्मा हैं वा मुक्त आत्मा हैं? शरीर का, सम्बन्ध का कोई भी बन्धन न हो। यह तो खेल-खेल में फर्ज-अदाई निभा रहे हो। यह फर्जअदाई भी निमित्तमात्र निभानी है, लगाव से नहीं, तब कहेंगे बन्धनमुक्त।

27) माया के सर्व बंधनों से मुक्त रहना है तो सदा बापदादा के दिलतख्त पर रहो। इस तख्त पर रहने से माया कुछ नहीं कर सकती। ऐसी दिलतख्त नशीन आत्मायें शरीर के बन्धन से भी सहज ही मुक्त हो सकती हैं। फाइनल पेपर है अन्त मती सो गति। अन्त में सहज रीति शरीर के भान से मुक्त हो जायें, यह है पास विद आनर की निशानी लेकिन यह तब हो सकेगा जब शरीर रूपी चोला टाइट न हो।

28) बन्धन-मुक्त आत्मा जब चाहे शरीर का आधार ले और जब चाहे शरीर का भान छोड़ अशरीरी बन जाये, इसके लिए अपने संस्कारों में भी इज़ीपन हो। सर्विस प्रति यह शरीर रूपी वस्त्र का आधार लो और सर्विस समाप्त होते ही इन वस्त्रों के बोझ से हल्के और न्यारे हो जाओ।

29) सर्विस करना - यह भी अपने को सम्पूर्ण बनाने का मीठा बन्धन है। इस बन्धन में जितना अपने को बांध लेंगे उतना और सर्व सम्बन्धों से मुक्त होते जायेंगे। यह मीठा बन्धन अभी के लिए है, फिर कभी नहीं होता। सभी इस ईश्वरीय स्नेह के बंधन में बंध जाओ तो दूसरे सब बंधन अपने आप कटते जायेंगे।

30) कर्मातीत अर्थात् देह के बन्धन से भी मुक्त। कर्म कर रहे हैं लेकिन कर्मों का खाता नहीं बन रहा है बिल्कुल न्यारे रहेंगे। कोई अटैचमेंट नहीं होगी। कर्म करने वाला अलग और कर्म अलग हैं। इस अवस्था में जास्ती बुद्धि चलाने की भी आवश्यकता नहीं है। संकल्प उठा और जो होना है वही होगा।

31) अभी समय की बचत, संकल्पों की बचत, शक्ति की बचत यह योजना बनाकर बीच-बीच में बिन्दू रूप की स्थिति में रहने का अभ्यास बढ़ाओ। इस स्थिति में रहने से कोई भी ईविल स्पिट वा ईविल संस्कार का फोर्स आपके ऊपर वार नहीं करेगा। आपका यह शक्तिरूप ईविल स्पिट को भी मुक्त करेगा। लेकिन उन्हों का सामना करने के लिए आप अपनी समस्याओं से ही मुक्त बनो।

## (त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

गुल्जार दादी जी के अमृत वचन

“लास्ट सो फास्ट जाना है तो हमारी हर एक्टिविटी एक बाबा की तरफ सबका अटेंशन खिंचवाये”

(14-11-08)

ओम् शान्ति शब्द यह भी एक शिव मंत्र है, क्योंकि कोई भी समस्या आ जाती है तो ओम् शान्ति के महामन्त्र से सहज पार कर लेते हैं क्योंकि अभी समय तो कलियुग के अन्त का चल रहा है तो ऐसे समय अगर ओम् शान्ति का महामन्त्र अर्थ से याद करेंगे तो सहज समाधान मिल जायेगा। एक होता है मंत्र की

रीति से कहना, दूसरा होता है अर्थ में टिकना। तो ओम् शान्ति में तीन बातें आती हैं; एक तो मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ। दूसरी बात मुझ आत्मा का बाप शान्ति का सागर है, शान्ति का दाता है और तीसरी बात हम आत्माओं का घर शान्तिधाम है। उसे शान्तिधाम कहो, निर्वाणधाम अथवा मुक्तिधाम कहो। तो ओम्

शान्ति अर्थ से सोचें तो शान्त स्वरूप हो जायेंगे क्योंकि आत्मा भी शान्त, बाप भी शान्त और घर भी हमारा शान्तिधाम। सोचना अलग चीज़ है लेकिन स्वरूप बनना और चीज़ है।

तो आजकल बाबा यही हम सब बच्चों को इशारा दे रहा है कि अब समय की रफ्तार तेज है, तो समय प्रमाण पुरुषार्थ की रफ्तार भी तेज है? जो बाबा कहता है सेकण्ड में मन का कन्ट्रोल हो जाये, जब चाहें जहाँ चाहें वहाँ मन उसी तरफ लग जाये। मनमनाभव का मंत्र जो है वो हमें बाबा फिर से याद दिला रहा है कि मन कन्ट्रोल में है? मेडिटेशन का मतलब भी है मन को परमात्मा के तरफ लगाओ तो मन व्यर्थ संकल्प नहीं करेगा, मन यहाँ वहाँ भागेगा नहीं, बाबा के पास बाबा की याद में रहेगा, यही तो योग है, यही मनमनाभव है। तो चेक करो बाबा की हम बच्चों में जो शुभ आशा है कि मेरा एक एक बच्चा राजा बन जाये, अगर मन के वश है तो राजा तो नहीं कहेंगे। स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी बाबा हमें बनाना चाहता है। इसके लिए ब्रह्मा बाबा ने भी कितना पुरुषार्थ करके अटेन्शन दिया है अपने ऊपर तब जाके ऐसा बनें। तो अभी अच्छी तरह से अपने मन को आर्डर प्रमाण रख, समय की रफ्तार प्रमाण तीव्र पुरुषार्थ करना है।

हम कर्मयोगी हैं तो कर्म करते भी परमात्मा की याद हो, क्योंकि परमात्मा की याद में कर्म करने से उनकी शक्ति मिलने से वो कर्म और ही श्रेष्ठ हो जाता है। तो खाते-पीते, चलते-फिरते मैं आत्मा इस शरीर से न्यारी हूँ, यह स्मृति स्वरूप है या नहीं, यह हमें ही चेकिंग करनी होगी। शरीर का भान खींचे नहीं, मन के ऊपर अधिकार हो। मनजीत, जगतजीत कहा जाता है। तो इतना कन्ट्रोल हमारा इन स्थूल कर्मेन्द्रियों के साथ सूक्ष्म मन, बुद्धि और संस्कार के ऊपर हो। बाबा कहते अभी इस पुरुषार्थ की गति को फास्ट करो। चल रहे हैं, कर रहे हैं, यह तो ठीक है परन्तु समय के प्रमाण अभी अपनी गति को चेक करना है कि चल रहे हैं या उड़ रहे हैं? उड़ने के समय अगर कोई चले तो पहुँचेंगे कब? इसलिए बाबा कहता है अपने ऊपर अटेन्शन को भी अण्डरलाइन करो तब समान बन साथ चल सकेंगे।

यहाँ मधुबन में आते भी इसीलिए हैं कि हम स्वयं को रिफ्रेश कर बाप समान बनने के पुरुषार्थ की गति को तीव्र बनावें क्योंकि यहाँ वायुमण्डल की बहुत मदद है इसलिए यहाँ जो

जितनी कमाई करना चाहो उतनी कर सकते हो यानि थोड़े दिन में पुरुषार्थ ज्यादा कर सकते हो, इसके लिए एक एक सेकण्ड को सफल करते जाओ। दूसरा और कोई काम ही नहीं है, खाओ, पिओ और याद करो। वायुमण्डल में सब एक ही एक है, भले पुरुषार्थ की गति अलग-अलग है लेकिन यहाँ जो भी बैठे हैं, अपने को सब बी.के. ही कहेंगे। अगर ऐसा ही वायुमण्डल अपने घर में मन का वायुमण्डल ऐसा ही बनाओ फिर तो सदा के योगी बन जायेंगे। जब बाबा ही हमारा संसार है तो संसार की सब प्राप्ति प्राप्त हो जाती हैं तो फिर बुद्धि का इधर उधर जाना आपेही बन्द हो जाता है। बुद्धि में एक बाबा ही बाबा रहेगा तो सारा ही अटेन्शन एक बाबा की तरफ ही रहेगा तो टेन्शन भी खत्म हो जायेगा, अटेन्शन में प्राप्ति हो जायेगी। तो बाबा का हम बच्चों से कितना प्यार है जो सब बातें सहज कर रहे हैं क्योंकि पीछे आने वालों को तो बहुत कम टाइम है लेकिन बाबा का वरदान भी है कि कोई-न-कोई लास्ट सो फास्ट जायेंगे।

हमारी हर एक्टिविटी सबको एक बाबा के तरफ ही अटेन्शन दिलाये, उसके लिए कितना हमको पुरुषार्थ करना होगा.. सोचो क्योंकि हमने भगवान को जाना माना और उनके बच्चे भी हैं तो इतना बाबा का हमें प्यार मिला, इतनी बाबा से शिक्षाये मिल रही हैं, उससे हमारा चेहरा कभी चिंतन में, कभी चिंता में, कभी टेन्शन में... ऐसा चेहरा नहीं होना चाहिए। ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी माना खिला हुआ रूहानी गुलाब ऐसा चेहरा हो। चलते फिरते हम खिले हुए गुलाब लगें, फरिश्ते लगें ऐसा देखके कोई भी सोचेगा कि यह क्या है, यह कौन है? ऐसे अपने चेहरे और चलन से सेवा करने का चांस तो सभी को है। तो ऐसे अपना पुरुषार्थ करना, चलन हमारी ऐसी हो जो हम उड़ रहे हैं यानि मन से... हमारा मन बाबा के साथ उड़ रहा हो। इसके लिए जो भी करो फॉलो फादर, कुछ भी करना है उसके पहले यह सोचो बाबा ने क्या किया? जो मैं कर रहा हूँ, बाबा ने यह सोचा जो मैं सोच रहा हूँ, मानो बोलना है तो बोलने से पहले सोचो बाबा ने यह ऐसे बोला? फॉलो करते जाओ बस। तो ऐसा पुरुषार्थ हमको करना है कि जो मन को हमने लक्ष्य दिया उसी लक्ष्य प्रमाण मेरा मन एकाग्र रहा या नहीं? यह हमको अपने आपको चेक करना है। अच्छा!

## दादी जानकी जी के अमृत वचन

**“याद के बल से पुरानी बातें भूल जायेंगी, देहधारियों का लगाव छूट जायेगा”**

शान्तिवन में बैठे सबका बुद्धियोग कहाँ है? संगमयुग पर हम ईश्वरीय गुण धारण करते हैं, सतयुग में दैवी गुण होंगे। द्वापर के बाद गुण-अवगुण मिक्स होंगे। अवगुण भी आ जायेंगे। परन्तु अभी हमें ईश्वरीय गुण धारण करने के लिए बाबा पढ़ा रहा है। कैसा हमारा सतगुरु है। गुरु तो हजारों लाखों हैं। गुरुओं की कितनी महिमा करते हैं, पर सतगुरु एक है। हम किसी गुरु के चले नहीं हैं। सतगुरु एक है, वो कहता है मामेकम् याद करो। यह मंत्र है, मनमनाभव। मन से मुझ एक को ही याद करो या एक के होकर रहो तभी बाप के गुण खींच सकेंगे। गुणों को धारणा की शक्ति से खींच लेंगे। फिर बाप वरसे में क्या देगा? मुक्ति जीवन मुक्ति। पहले गुणों को धारण करना होगा, सिर्फ याद करेंगे तो फरियाद नहीं होगी। याद का बल अलग है, पुरानी बातें भूल जायेंगी। याद से और देहधारियों का लगाव छूट जायेगा। संकल्प, वाणी, कर्म पर ध्यान रहेगा। जिसकी याद आती है उसका नाम भी याद आयेगा, रूप भी याद आयेगा।

चढ़ती कला, तेरे भाने सर्व का भला। जिस बच्चे की चढ़ती कला, उस निमित्त बने हुए के साथ अनेकों का भला। याद में देखना है मेरा तो कल्याण हुआ, मेरे निमित्त कितनों का भला हुआ क्योंकि राजाई हमने गंवाई है, बाबा न राजाई करता, न गंवाता है। अभी आसुरी गुणों को खत्म करने के लिए, दैवी गुण सम्पन्न बनने के लिए ईश्वरीय गुण चाहिए। ईश्वरीय गुणों से फिर शक्ति आयेगी।

बुद्धि स्वच्छ बनने से ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर को स्वयं में समाने की शक्ति आ गयी। सागर बाबा है, हमको पतित-पावनी गंगा बनाता है। गंगा निकली भागीरथ के मस्तक से। पावन बनते जाओ और बनाते जाओ। ऐसे नहीं पहले पावन बनें फिर बनायें, समय थोड़ा है। संकल्प, वाणी, कर्म, सम्बन्ध, इसमें कमाई जमा हुई या गंवाया? गंवाते हैं तो अपना ही खर्च नहीं चला सकते हैं। कमाते भी जाओ, दान भी करते जाओ। इतनी कमाई हो जो सारा परिवार सुखी हो, भविष्य की प्रालम्भ ऊंची हो। भविष्य के लिए फिकर न करनी पड़े। ओम् शान्ति।

(दूसरा क्लास)

## दादी जानकी जी के अमृत वचन

**“पढ़ाई का सबूत है आहार, विचार और व्यवहार में परिवर्तन”**

(30-07-2006)

अमृतवेले याद में बैठना माना अमृत पीते जाना। सर्व शक्तिमान बाबा शक्ति देता है, इस समय (मुरली क्लास के पहले) याद में बैठते हैं तो स्मृति में रहता है कि बाबा पढ़ायेगा। यह आधा-पौना घण्टा जो मिलता है वो सारा दिन काम आता है। अभी जो मिलेगा, भगवानुवाच अर्जुन प्रति। पढ़ाता सबको इकट्ठा है पर हरेक के लिए इन्डीविजुअल

पढ़ाता है। जब भी मुरली पढ़ते हैं तो मेरे लिए ही है, और बिल्कुल नयी लगती है।

निश्चय बुद्धि प्रीत बुद्धि का अनुभव दिन भर में बहुत काम करता है। जहाँ सेवा के लिए निमित्त हैं, वहाँ खुद भी सन्तुष्ट रहें, सब मेरे से सन्तुष्ट रहें और सेवा में भी सन्तुष्टता हो। यह कोई लिखत में सर्टिफिकेट नहीं मिलेगा परन्तु



अपने आप वायब्रेशन आयेगे। अगर मैं स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट नहीं हूँ तो जो बचपन का सुख है वो मिस होता जा रहा है। ईश्वरीय बचपन जो है वो कभी भूला नहीं है। बचपन का सुख, सदा सन्तुष्ट रहने में मदद करता है। फिर हम जिसके सम्पर्क में हैं वो सन्तुष्ट रहे। जो सेवा सामने है उस सेवा में निमित्त भाव से एक्कूरेंट रहें, सफलता हो तो सेवा से भी सन्तुष्ट। ये सब अति सूक्ष्म पढ़ाई है, आत्मा भी सूक्ष्म है। सिर्फ बुद्धि को जानने वाली पढ़ाई नहीं है, बुद्धि को बदलने वाली, स्वच्छ बनाने वाली पढ़ाई है। जितना बुद्धि स्वच्छ बनती है उतना धारणा भी अच्छी होती है।

जहाँ जाते हैं, जहाँ रहते हैं, जो बाबा ने सिखाया है वह जीवन में हो। आहार, विचार और व्यवहार, सूक्ष्म विदेही रहने की आदत और कार्य व्यवहार में ट्रस्टी, मैं पन के भान से परे, मेरा कुछ नहीं। मेरापन है माना मेरी पढ़ाई ठीक नहीं है। पढ़ाई है ही देही-अभिमानि बनने की। इसमें छोटी बच्ची नहीं हूँ, स्टूडेंट लाइफ है, इसमें बचपना नहीं चल सकेगा। बचपन है सदा सुखी, नशे में रहने के लिए, किसके बच्चे हैं, क्या पढ़ रहे हैं इससे पढ़ाई अच्छी पढ़ सकते हैं।

योग में बैठेंगे तो इधर-उधर नहीं देखेंगे पर नींद आयेगी, मुरली के समय इधर-उधर देखेंगे। ये स्टूडेंट

लाइफ उन्नति वाली नहीं है। पढ़ाई से जीवन में प्रफुल्लता आती है। हमको और कुछ पुरुषार्थ नहीं करना है, सपूत बन सबूत देना है। सपूत किसको कहा जाता है? बाबा को सामने देखें मैं सपूत हूँ। आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार, एक बाप के सिवाय कुछ याद आता ही नहीं है। यज्ञ का पैसा है, यज्ञ मुझे खिलाता है। सिम्पुल रह करके सैम्पल बनना है। अगर सैम्पल न बनी तो नशा नारायण बनने का नहीं चढ़ेगा।

सच्चाई और सफाई, पहले सफाई फिर सच्चाई। सार्टीफिकेट परिवार से मिलेगा। बाबा भी सार्टीफिकेट नहीं देता है। न केवल बाबा को ही सबूत चाहिए पर सारे ईश्वरीय परिवार को सबूत चाहिए।

लोग प्रेम के भिखारी हैं, शान्ति के प्यासी हैं। भटकते हैं, कहाँ थोड़ा सा प्यार मिले। झूठा भी प्यार मिलता है तो फिदा हो जाते हैं, शान्ति भी कहीं से मिलती तो बैठ जाता है। अन्दर की शान्ति तो आती नहीं है, प्यार तो सच्चा मिलता नहीं है। बाबा जो शान्ति और प्रेम का सागर है, उसने हमें शान्ति और प्रेम दिया है। पहले शान्ति मिली, प्यार मिला फिर ज्ञान दिमाग में बैठता है। मुरली सुनते सुनाते सिम्पुल भी रहें और सैम्पल भी रहें। सैम्पल बनने के लिए माइण्ड सिम्पल हो, भाषा भी ऐसी अच्छी हो। अच्छा।

## दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

### “धूल में खेलने के बजाए पवन पुत्र बन सदा उड़ते रहो”

प्यारे बाबा के हम सभी कल्प के बिछुड़े हुए बच्चे अपने घर में बैठे हैं। कहा जाता - दिन का खोया रात को वापस आ जाए तो उसको खोया हुआ नहीं कहेंगे। यह कहावत भी हमारी ही है। हम बाप को भूले तो आधाकल्प खो गये। माया की गोदी में पहुंच गये। माया ने हमें गले तक पकड़ रखा है। जैसे कहते हैं सोने में खाद पड़ती, ऐसे मुझ सोने में तमोप्रधानता की खाद पड़ गई थी। बाबा ने आकरके हमें फिर से ज्ञान-योग की भट्टी में डाला है और खाद

निकाल सच्चा सोना बनाया है। हम जो माया के पास खो गये थे, बाबा ने अब इस संगम पर हम खोये हुए बच्चों को फिर से गोदी में बिठाया है और वापस अपने घर ले चल रहा है, इसलिए बाबा हमें मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे कहता है। हम बाबा के बहुत प्यारे बच्चे हैं, जिन्हें स्वयं बाप ने पाला है। वैसे भी कोई गुणवान आत्मा होती है तो सभी को प्यारी होती, उसके लिए कहते इसे तो स्वयं भगवान ने बैठकर बनाया है। गुणों की सुन्दरता को देख कहते हैं इसे तो

भगवान ने खास बनाया है। तो हम सभी को स्वयं भगवान ने खास बनाया है। कैसे बनाया, हमारा भाग्य विधाता हमारे तकदीर की लकीरें खींच रहा है इसलिए हमें अपने भाग्य का गुणगान करना है। भाग्य विधाता की महिमा गानी है। स्वयं भगवान ने स्पेशल हमारे ललाट पर भाग्य की लकीरें खींची हैं, तब तो हम कहते स्वयं भाग्य-विधाता हमारी तकदीर की लकीरें खींच रहा है इसलिए हमें अपने भाग्य का गुणगान करना है। भाग्य-विधाता की महिमा गानी है। भाग्य विधाता ने घृत डाल हमारा दीवा जगाया है इसलिए जब कोई पूछते क्या तुम्हें निश्चय है कि हमको भगवान पढ़ाते हैं? तो हम कहते क्या इसमें भी कोई संशय की बात है। अगर कोई पूछते हैं तो माना संशय है। उनके तकदीर की लकीरें अभी तक खींची हुई नहीं हैं।

हम तकदीर जगाकर आये हैं, जगाने की मेहनत नहीं करते। हमारी तकदीर जगी हुई है। हम विश्व की सेवा पर उपस्थित हैं। भक्त कहेंगे - हे भगवान मेरी तकदीर अच्छी करना, हम कहते अच्छे से अच्छी, महान से महान, सृष्टि को रोशन करने वाली तकदीर बाबा ने हमारी जगा दी है। ब्राह्मण अगर कहें बाबा हमारी तकदीर जगाकर रखना तो यह संशय है। बाबा हमें मदद करते रहना, क्या बाबा हमें देता नहीं जो मैं मांगती। कहावत भी है सहज मिले सो दूध बराबर... बाबा ने हमारी दूध बराबर तकदीर बनाई। हम मांगकर उस दूध को पानी क्यों बनाते! दृढ़ निश्चय वाले कभी कुछ मांग नहीं सकते। वह तो ओहो! बाबा वाह बाबा के गीत गायेगे।

बाबा कहते मैं रोज़ अमृतवेले बच्चों के नाज़ों का खेल देखता हूँ क्योंकि बच्चे अभी तक बहुत नाज़ नखरे करते हैं, स्वयं को नीचे बिठाते और बाबा को बहुत ऊंचाई पर देखते हैं तभी दूरी का अनुभव होता है। मैं तो बाबा को अपने साथ बिठाती, मैं बाबा के समान बनकर साथ में बैठ जाती। ऐसे नहीं बाबा आप तो अर्श पर हैं, मैं फर्श पर हूँ। यह इतनी दूरी भी क्यों। दूर रहेंगे तो धरनी की धूल आकर्षण करेगी। जब बाबा ने हमें पवन-पूत बनाकर उड़ना

सिखाया फिर हम धूल में क्यों खेलते! इतनी दूरी क्यों? समान बनकर बाबा के साथ क्यों नहीं बैठ जाते!

हम हैं बाबा की सच्ची-सच्ची परियां। हमारी बुद्धि धरनी पर क्यों। हम तो धरनी के सितारे हैं, हम जग को रोशन करने वाले हैं। ऐसे रोज़ अमृतवेले अपनी मस्ती की छाप लगाओ फिर कभी नहीं कहना पड़ेगा कि बाबा हमारी तकदीर जगा दो। बाबा ने हमें चोटी से पकड़कर निकाला और अपने साथ गद्दी पर बिठाया। हम कोटों में कोई सलेक्टेड डायमण्ड हैं। फिर हम डायमण्ड कहें अभी मेरे में दाग लगा हुआ है। तो अपनी वैल्यू को हम खुद ही कम क्यों करते। बाबा ने हमें सलेक्ट कर लिया। हम बाबा के पास पहुंच गये, दुनियाँ देख-देख चिढ़ती रहे। हम तो बाबा के बन गये, बाबा हमारा बन गया, इसलिए कभी यह नहीं कहो - क्या करूं माया आती है। अरे माया आती नहीं है, आप संकल्प करके उसे बुलाते हो। आप नीचे आते हो तो वह पास में आती है। वह आती नहीं, तुम्हें छूती नहीं, आप छुट्टी देते हो तो नजदीक आती हैं। कहते हैं मंसा में आकर्षण होती है लेकिन माया खाती तो नहीं है! उनको खाने नहीं देना। आवे आकर देखकर चली जाए। आप उनका स्वागत नहीं करना। उनकी पालना नहीं करना। सिर्फ माया खावे नहीं, उसकी सम्भाल रखना। गेट पर चौकीदार, होशियार रखना जो अन्दर आकर नुकसान न करे। गेट के अन्दर आने नहीं देना। बाहर से आये आकर नमस्कार करके चली जाए। हमारा उसमें क्या जाता। ऐसा नहीं कहो माया आती है, वह आती नहीं है, तुम्हारा पेपर लेती है।

आप सभी की कमियों को, बुराईयों को दूर करने के लिए ही बाबा ने इसका नाम रखा है राजस्व अश्वमेध अविनाशी रूद्र ज्ञान यज्ञ... किसी पर भी कोई ग्रहण हो तो उसे स्वाहा करके जाना। क्रोध का, काम का, जो भी ग्रहण रहा हुआ हो तो शिवबाबा के मन्त्र से, उसे प्यार के बल से निकाल कर जाना। फिर माया मासी आयेगी ही नहीं। अच्छा। ओम् शान्ति।